Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 552-554

शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

ज्योति महावर*
डॉ. अलका पारीक**

सार

वर्तमान परिप्रेक्ष्य के इस प्रतियोगितावादी युग में प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं के शैक्षिक स्तर को उच्च बनाने की दौड़ में व्यस्त है। आज प्रत्येक विद्यार्थी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक दबाव में है। उस पर शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् जीविकोपार्जन के लिए उच्च पद की नौकरी का दबाव है। इसी कारण प्रत्येक विद्यार्थी अपने विद्यालय के प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा चयनित प्रशिक्षित शिक्षकों की उपेक्षा कर कोचिंग, ट्यूशन केन्द्रों के अप्रशिक्षित शिक्षकों से अध्ययन करने हेतु आकर्षित हो रहे है। वर्तमान विद्यार्थी दो नावों में सवार है। वह ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्यालय के शिक्षक तथा ट्यूशन शिक्षक दोनों से अध्ययन करता है। दोनों शिक्षकों के अध्यापन तकनीकों में अत्याधिक अन्तर होता है। शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता में अन्तर होने के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। वर्तमान में उच्च पद की नौकरी प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी शैक्षिक अभिप्रेरित व्यवहार का उच्च होना आवश्यक है। उसी स्थिति में वह प्रतियोगी परीक्षा में चयनित होंगे। कभी–कभी विद्यार्थी अचयनित हो जाते है तो फल स्वरूप तनावग्रस्त हो अवसाद की स्थिति में आत्महत्या जैसे कृत्य कर लेते है।

अध्ययन की आवश्यता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की नेतृत्वशीलता, विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है। यह ज्ञात करने के लिए समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन

''शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

तकनीकी शब्दों का परिभाषिकरण

नेतृत्वशीलताः किसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सम्प्रेषण के माध्यम द्वारा व्यक्तियों को प्रभावित करने की योग्यता ही नेतृत्व कहलाती है।

अभिप्रेरित व्यवहारः अभिप्रेरित व्यवहार व्यक्ति की मनोवृति है जब वह किसी कार्य को करने के लिए किसी व्यक्ति, वस्तु, पद द्वारा अभिप्रेरित होता है तत्पश्चात वह सकारात्मक तथा नकारात्मक व्यवहार करता है उसे ही अभिप्रेरित व्यवहार कहा जाता है।

शोध के उद्देश्य

- शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की नेतृत्वशीलता के अन्तर का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार के अन्तर का अध्ययन करना।

* शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, एस.एस. जैन सुबोध महिला पी.जी. कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, सांगानेर, जयपुर, राजस्थान।

शोध की परिकल्पना

- शिक्षकों की नेतृत्वशीलता एवं विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की नेतृत्वशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधिः सर्वेक्षण विधि

शोध के चरः स्वतंत्र चर – नेतृत्वशीलता

आश्रित चर – अभिप्रेरित व्यवहार

न्यादर्शः शोध कार्य हेतु जयपुर जिले के 200 शिक्षक एवं 11वीं कक्षा के 200 विद्यार्थी यादृच्छिक विधि से लिए गए।

उपकरण

अभिप्रेरित व्यवहारः डॉ. टी.आर. शर्मा (2006) का शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरित परीक्षण (AAMT)

नेतृत्वशीलताः स्वनिर्मित शिक्षक नेतृत्वशीलता मापनी (T.L.S.)

सांख्यिकीय विधिः मध्यमान, टी–परीक्षण, सहसम्बन्ध

शोध परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध जयपुर जिले तक सीमित रहेगा।
- प्रस्तुत शोध हेतु 200 शिक्षक तथ 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध परिणाम एवं व्याख्या

- शिक्षकों की नेतृत्वशीलता एवं विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्याः 1

समूह (G)	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शिक्षकों की नेतृत्वशीलता एवं विद्यार्थियों का अभिप्रेरित व्यवहार	200	– .275	सार्थक

स्वतंत्रता कोटि (df) = 198

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक – .275 है जो ऋणात्मक निम्नकोटि सहसम्बन्ध है जो स्तर सहसम्बन्ध मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना – 1 ''शिक्षकों की नेतृत्वशीलता एवं विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।'' अस्वीकृत होती है।

- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की नेतृत्वशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्याः 2

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
सरकारी विद्यालयों के शिक्षक	100	168.95	13.488	5.012	अस्वीकृत
गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षक	100	179.00	14.840		

स्वतंत्रता कोटि (df) = 198

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विश्लेषण के आधार पर प्राप्त टी–मूल्य 5.012 हैं जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना – 2 ''सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की नेतृत्वशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' अस्वीकृत होती हैं।

- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्याः 3

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	100	22.38	8.794	–2.158	अस्वीकृत
गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	100	25.26	10.042		

स्वतंत्रता कोटि (df) = 198

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त टी–मूल्य –2.158 है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना – 3 ''सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।'' अस्वीकृत होती है।

अध्ययन के निष्कर्ष

- शिक्षकों की नेतृत्वशीलता एवं विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में ऋणात्मक निम्नकोटि सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की नेतृत्वशीलता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Sharma, Dr. T.R. : Manual for Academic Achievement Motivation Test.
- अस्थाना, बी.पी., (1986) : मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- अस्थाना, डॉ. बिपिन एवं अस्थाना, श्वेता (2007) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- भटनागर, डॉ. ए.बी. एवं भटनागर, डॉ. अनुराग (2011) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ।
- गैरेट, हेनरी. ई. (1989) : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, काल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- नागर, कैलाश नाथ एवं मित्तल, डॉ. एस.एन. (2012–13) सांख्यिकी के मूल तत्व, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
- शर्मा, आर.ए. (1993) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्याप्रकाशन, मेरठ।
- शर्मा, आर.ए. (2013) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- श्री माली के.एल. (1961) : प्राब्लम्स ऑफ एज्यूकेशन इन इंडिया, नई दिल्ली पब्लिकेशन डिविजन
- www.google.com
- www.researches.com